फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त : 24)

Bachchon Ki Tarbiyat
Kab Aur Kaise Ki Jaae ? (Hindi)

बच्चों की तरबियत कब और कैसे की जाए ?

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई ﷺ के म-दनी मुज़ा-करे नम्बर 12 और 13 के मवाद समेत अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" ने नई तरतीब और कसीर मवाद के साथ तय्यार किया है।

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(المُستطرَف ج۱ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया) । (تاريخ دمشق لابن عساكر ج٥١ ص١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **"बच्चों की तरबियत कब और कैसे की जाए ?"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ه	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = ای / ِی	इ = اِ	ऐ = ـَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9327776311 ´ E-mail :translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए़ थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के त़ह़्त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** इन म-दनी मुज़ा-करात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इ़ल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इ़नायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)
29 जुल क़ा'दतिल ह़राम 1438 सि.हि./22 अगस्त 2017 ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

बच्चों की तरबियत कब और कैसे की जाए ?

(मअ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (34 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक दिन रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم तशरीफ़ लाए आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेह्‌रए अन्वर पर ख़ुशी के आसार थे, फ़रमाया : मेरे पास जिब्रीले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) आए और अ़र्ज़ की : आप का रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है : ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा कोई उम्मती तुम पर एक बार दुरूद भेजे तो मैं उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाऊं और आप का कोई उम्मती आप पर एक मर्तबा सलाम भेजे तो मैं उस पर दस सलाम भेजूं ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बच्चों की तरबियत कब और कैसे की जाए ?

सुवाल : बच्चों की तरबियत कब और कैसे की जाए ?

---

1 ..... نسائی، کتاب السھو، باب الفضل فی الصلاۃ علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ص ۲۲۲، حدیث: ۱۲۹۲ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

जवाब : बचपन ही से औलाद की तरबियत पर भरपूर तवज्जोह देनी चाहिये। बा'ज़ लोग येह कह कर "अभी बच्चा है, बड़ा होगा तो ठीक हो जाएगा" बच्चों को शरारतों और ग़लत़ आ़दतों से नहीं रोकते, वोह लोग दर ह़क़ीक़त बच्चों के मुस्तक़्बिल को ख़राब करते हैं और बड़े होने के बा'द बच्चों के बुरे अख़्लाक़ और गन्दी आ़दात पर रोते और कुढ़ते दिखाई देते हैं। बचपन में जो अच्छी बुरी आ़दतें बच्चों में पुख़्ता हो जाती हैं वोह उ़म्र भर नहीं छूटतीं इस लिये वालिदैन पर लाज़िम है कि वोह बच्चों को बचपन ही में अच्छी आ़दतें सिखाएं और बुरी आ़दतों से बचाएं। जब बच्चा कोई अच्छा काम करे तो उस की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करें, अगर कोई बुरा काम करे तो उस की ह़ौसला शिकनी करें और मुनासिब अन्दाज़ में उस की डांट डपट करें ताकि वोह आयिन्दा उस काम से बाज़ रहे म-सलन बच्चे ने किसी को मारा, गाली दी या स्कूल में दूसरे बच्चे की कोई चीज़ चुरा ली तो वालिदैन को चाहिये कि वोह सख़्ती से इस का नोटिस लें ताकि बच्चा आयिन्दा कभी भी ऐसी ह़-र-कत न कर सके। अगर अभी बच्चे पर सख़्ती न की तो हो सकता है फिर येह रफ़्ता रफ़्ता मज़ीद चोरियां करता चला जाए और बिल आख़िर एक दिन मुआ़-शरे का बदनाम डाकू बन कर उभरे। बचपन ही से अपनी औलाद की सह़ीह़ तरबियत न करने की एक इ़ब्रत नाक दास्तान सुनिये और इ़ब्रत का सामान कीजिये :

www.dawateislami.net

औलाद की सहीह तरबियत न करने की इब्रत नाक दास्तान

एक ख़त़रनाक डाकू गिरिफ़्तार कर लिया गया, मुक़द्दमा चला, उस पर डकेतियों और क़त्लो ग़ारत गरियों की मुख़्तलिफ़ वारिदातें साबित हो गईं जिन के सबब उसे फांसी की सज़ा सुनाई गई। जब फांसी का वक़्त क़रीब आया तो उस से उस की आख़िरी आरज़ू पूछी गई, उस ने अपनी मां से मुलाक़ात की ख़्वाहिश ज़ाहिर की चुनान्चे उस की मां को बुलाया गया, जूं ही उस ने अपनी मां को देखा, एक दम उस पर ह़म्ला कर दिया और नोचा नाची और मारा मारी शुरूअ़ कर दी, ड्यूटी पर मौजूद अ़मले ने जूं तूं ज़ख़्मी मां को बे रह़्म बेटे के चुंगल से छुड़ाया। जब उस डाकू से इस सफ़्फ़ाकाना ह़-र-कत का सबब पूछा गया तो बोला : मुझे फांसी के फन्दे तक इसी मां ने पहुंचाया है, दर अस्ल क़िस्सा यूं है कि मैं ने बचपन के ला शुऊ़री के दौर में स्कूल के अन्दर एक त़ालिबे इ़ल्म की पेन्सिल चुरा ली और घर ला कर अपनी इस मां को दिखाई, अब चाहिये तो येह था कि येह मुझे इस ग़लत़ काम से नफ़्रत दिलाती मगर येह सिर्फ़ मुस्कुरा कर चुप हो रही, उस वक़्त मुझ में अ़क़्ल ही कितनी थी ! मैं समझा कि मैं ने कोई बहुत ही अच्छा कारनामा अन्जाम दिया है, मेरा ह़ौसला बढ़ा और मैं मज़ीद पेन्सिलें और कॉपियां चुराने लगा, जब बड़ा हुवा तो

www.dawateislami.net

चोरी की आ़दत काफ़ी पक्की हो चुकी थी और दिल ख़ूब खुल गया था लिहाज़ा मैं ने डकेतियां शुरूअ़ कर दीं, इसी लूटमार के दौरान मुझ से बा'ज़ क़त्ल की वारिदातें भी सरज़द हो गईं और मैं बहुत "ख़त़रनाक डाकू" बन गया आख़िर पोलीस के हाथों गिरिफ़्तार हो कर आज अपनी इस मां की ग़लत़ तरबियत की बदौलत चन्द ही लम्हों के बा'द अपने गले में फांसी का फन्दा पहनने वाला हूं।[1]

बच्चों की तरबियत की अहम्मिय्यत

सुवाल : शरीअ़त के मुत़ाबिक़ बच्चों की तरबियत करने की अहम्मिय्यत बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : शरीअ़त के मुत़ाबिक़ बच्चों की तरबियत की अहम्मिय्यत बयान करते हुए हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : बच्चों की तरबियत अहम और ताकीदी उमूर में से है, बच्चा वालिदैन के पास अमानत है, उस का पाक दिल एक ऐसा जौहरे नायाब है जो हर नक़्श व सूरत से ख़ाली है लिहाज़ा वोह हर नक़्श को क़बूल

---

1 ..... अपनी औलाद की शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबियत करने की तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 187 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "तरबियते औलाद" का मुत़ा-लआ़ कीजिये, इस किताब में बच्चे की पैदाइश से ले कर उस की शादी तक के तमाम उमूर म-सलन नाम रखना, अ़क़ीक़ा, ख़तना, तह़नीक और मुख़्तलिफ़ आदाबे ज़िन्दगी वग़ैरा को बयान किया गया है। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

करने वाला और जिस त़रफ़ उसे माइल किया जाए उस की त़रफ़ माइल हो जाने वाला है । अगर उसे अच्छी बातों की आ़दत डाली जाए और उस की ता'लीमो तरबियत की जाए तो इसी पर उस की नश्वो नमा होती है, जिस के बाइ़स वोह दुन्या व आख़िरत में सआ़दत मन्द हो जाता है और उस के सवाब में उस के वालिदैन, असातिज़ा और तरबियत करने वाले सब शरीक होते हैं । अगर उसे बुराई की आ़दत डाली जाए और जानवरों की त़रह़ छोड़ दिया जाए तो वोह बद बख़्ती का शिकार हो कर हलाक हो जाता है और उस का गुनाह उस के सर-परस्त की गरदन पर होता है चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا (پ۲۸، التحریم: ۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ ।

जिस त़रह़ बाप बच्चे को दुन्या की आग से बचाने की कोशिश करता है इसी त़रह़ उसे चाहिये कि अपने बच्चे को जहन्नम की आग से भी बचाए और जहन्नम की आग से बचाने का त़रीक़ा येह है कि बच्चे की तरबियत करे, उसे तहज़ीब सिखाए, अच्छे अख़्लाक़ की ता'लीम दे, बुरे दोस्तों से दूर रखे, आसाइशों की आ़दत न डाले, ज़ैबो ज़ीनत और ऐ़श पसन्दी की मह़ब्बत उस के दिल में पैदा न होने दे कि वोह इस की त़लब में अपनी

www.dawateislami.net

उ़म्र ज़ाएअ़ कर देगा । फिर जब बड़ा होगा तो दाइमी हलाकत में मुब्तला हो जाएगा लिहाज़ा शुरूअ़ से ही उस की निगह्दाश्त रखे, किसी दीनदार औ़रत की परवरिश में दे जो सिर्फ़ ह़लाल खाती हो और उसी से दूध पिलवाए क्यूं कि जो ह़राम खाती है उस के दूध में ब-र-कत नहीं होती नीज़ जब बच्चे की नश्वो नमा ह़राम ग़िज़ा से होगी तो उस में ख़बासतें भर जाएंगी और उन ही ख़बाइस की त़रफ़ उस की त़बीअ़त माइल होगी । फिर जब उस में तमीज़ और समझदारी के आसार देखे तो अच्छे त़रीक़े से उस की निगरानी करे और तमीज़ और समझदारी के बारे में इस त़रह़ पता चलेगा कि अव्वलन उस में ह़या का ज़ुहूर होगा क्यूं कि जब वोह ह़या करते हुए बा'ज़ कामों को छोड़ देगा तो येह बात इस पर दलालत करेगी कि उस में अ़क़्ल का नूर चमक रहा है जिस की रोशनी में वोह बा'ज़ अश्या को क़बीह़ देखता है और बा'ज़ को नहीं, यूं वोह बा'ज़ से ह़या करते हुए बचेगा और बा'ज़ से नहीं और येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हिदायत और बिशारत है जो अख़्लाक़ के मो'तदिल होने और क़ल्ब की सफ़ाई पर दलालत करती है और इस बात की अ़लामत है कि बड़े हो कर उसे कामिल अ़क़्ल नसीब होगी । जब बच्चे में ह़या पैदा हो जाए तो उस की त़रफ़ से ला परवाई इख़्तियार नहीं करनी चाहिये

www.dawateislami.net

बल्कि उस की ह़या और तमीज़ के मुत़ाबिक़ उसे अदब सिखाना चाहिये[1] ।[2]

तरबियत करने वाले को कैसा होना चाहिये ?

सुवाल : बच्चों की तरबियत करने वाले को ख़ुद कैसा होना चाहिये ?

जवाब : बच्चों की तरबियत करने वाले का ख़ुद शरीअ़त के मुत़ाबिक़ तरबियत याफ़्ता होना, फ़र्ज़ उ़लूम की मा'लूमात रखना, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रहना और वक़्तन फ़ वक़्तन उ़-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से रहनुमाई लेते रहना ज़रूरी है क्यूं कि जब ख़ुद उसे शरीअ़त व सुन्नत के बारे में मा'लूमात नहीं होंगी तो वोह बच्चों की शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबियत कैसे कर सकेगा । बच्चों की तरबियत करने वाले को चाहिये कि वोह घर, दुकान, कारख़ाना और बाज़ार हर जगह अपना किरदार सुथरा रखे और येह आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों और पीरे कामिल की ब-र-कतों से ही आसान है । जब घर बाहर हर जगह किरदार दुरुस्त होगा तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से घर में म-दनी माह़ोल बनता चला जाएगा । हमारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा

---

1 ...... احیاء العلوم، کتاب ریاضۃ النفس و تھذیب الاخلاق، بیان الطریق فی ریاضۃ الصبیان فی أول نشوھم...١، ٨٨/٣، دار صادر بیروت

2 ......औलाद की तरबियत के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 188 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "तरबियते औलाद" का मुत़ा-लआ़ कीजिये ।

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चालीस साल तक क़ौम के सामने अपना किरदार पेश किया। येही वज्ह है कि कुफ़्फ़ारे ना हन्जार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के किरदार पर कोई उंगली न उठा सके लिहाज़ा अपना किरदार और अन्दाज़े ज़िन्दगी दुरुस्त रखना चाहिये।

अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा
महबूब का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे

(वसाइले बख़्शिश)

बार बार टोकते रहने से इज्तिनाब कीजिये

बा'ज़ लोग घर से बाहर तो इन्तिहाई आजिज़ी और मिस्कीनी से पेश आते हैं मगर घर में मारधाड़ करते रहते हैं जिस से घर वालों और बच्चों पर बहुत बुरा असर पड़ता है। घरेलू मुआ-मलात में बात बात पर बच्चों की अम्मी को उन के सामने झाड़ने, मारने और बार बार टोकते रहने से भी बच्चों के ज़ेहनों पर बुरा असर पड़ता है और यूं बच्चे हाथ से निकल जाते हैं क्यूं कि बच्चे फ़ितरी तौर पर मां से ज़ियादा महब्बत करते हैं। जब बाप उन के सामने उन की मां को बुरा भला कहेगा तो बच्चों के दिलों में आहिस्ता आहिस्ता बाप की क़द्र कम होती चली जाएगी बिल आख़िर बाप उन्हें लाख समझाए मगर वोह उस की बात को अहम्मिय्यत नहीं देंगे।

जिन बुरे कामों से बच्चों को रोकना चाहते हैं ख़ुद भी उन कामों से इज्तिनाब कीजिये क्यूं कि वालिदैन के अच्छे या बुरे कामों

www.dawateislami.net

के अ-सरात बच्चों पर भी पड़ते हैं म-सलन बाप अगर बच्चे के सामने सिगरेट पिये और बच्चे को इस से मन्अ़ करे तो बच्चा अपने छोटे दिमाग़ से सोचेगा कि सिगरेट पीने में कोई न कोई ख़ूबी ज़रूर है जिस को बाप ह़ासिल करना चाहता है और मुझे महरूम कर रहा है लिहाज़ा बच्चा छुप कर सिगरेट पियेगा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लामी ता'लीमात के मुत़ाबिक़ अपनी और अपनी औलाद की तरबियत का जज़्बा पाने, इल्मे दीन सीखने और सिखाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, फ़र्ज़ उ़लूम के ह़ुसूल, अपनी तमाम शर-ई ज़िम्मादारियों पर अ़मल के साथ साथ म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल में तरक़्क़ी के मुआ़-मले में सन्जी-दगी के साथ मश्ग़ूल, रोज़ाना फ़िक्रे मदीना, हर माह म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र और म-दनी मुज़ा-करों में शिर्कत को अपना मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी तरबियत के साथ साथ अपने घर वालों की भी तरबियत का सामान होगा।

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार
सुन्नतों की तरबियत के क़ाफ़िले में बार बार

(वसाइले बख़्शिश)

www.dawateislami.net

छोटे म-दनी मुन्नों की तरबियत का त़रीक़ा

सुवाल : छोटे म-दनी मुन्नों की तरबियत के ह़वाले से कोई ह़िकायत बयान फ़रमा दीजिये ।

जवाब : छोटे बच्चों की ज़िन्दगी के इब्तिदाई साल बक़िय्या ज़िन्दगी के लिये बुन्याद की ह़ैसिय्यत रखते हैं । बच्चे जो कुछ बचपन में सीखते हैं वोह ज़िन्दगी भर उन के दिलो दिमाग़ में रासिख़ रहता है लिहाज़ा बच्चों को शुरूअ़ से ही अच्छी आ़दात व अख़्लाक़ का आ़दी बनाया जाए चुनान्चे इस ज़िम्न में छोटे बच्चों की तरबियत से मालामाल एक ज़बर दस्त ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये और अपने बच्चों की तरबियत का सामान कीजिये :

बच्चों की तरबियत से मालामाल एक ज़बर दस्त ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन **अ़ब्दुल्लाह** तुस्तरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : मैं तीन साल की उ़म्र का था कि रात के वक़्त उठ कर अपने मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सव्वार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار को नमाज़ पढ़ते देखता, एक दिन उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : क्या तू उस रब को याद नहीं करता जिस ने तुझे पैदा फ़रमाया ? मैं ने पूछा : मैं उसे किस त़रह़ याद करूं ? फ़रमाया : "जब रात सोने लगो तो ज़बान को ह़-र-कत दिये बिग़ैर मह़ज़ दिल में तीन मर्तबा येह कलिमात कहो : اَللّٰهُ مَعِیْ، اَللّٰهُ نَاظِرٌ اِلَیَّ، اَللّٰهُ شَاهِدِیْ या'नी **अल्लाह** तआ़ला मेरे साथ है, **अल्लाह** तआ़ला मुझे देखता है, **अल्लाह** तआ़ला मेरा गवाह है ।"

www.dawateislami.net

मैं ने चन्द रातें येह कलिमात पढ़े और फिर उन को बताया। उन्हों ने फ़रमाया : अब हर रात सात मर्तबा पढ़ो। मैं ने ऐसा ही किया और फिर उन को मुत्तलअ़ किया। फ़रमाया : हर रात ग्यारह मर्तबा येही कलिमात पढ़ो। मैं ने इसी त़रह़ पढ़ा तो मेरे दिल में उस की लज़्ज़त महसूस हुई। जब एक साल गुज़र गया तो मेरे मामूंजान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने फ़रमाया : "मैं ने जो कुछ तुम्हें सिखाया है उसे क़ब्र में जाने तक हमेशा पढ़ते रहना اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह तुम्हें दुन्या व आख़िरत में नफ़्अ़ देगा।" मैं ने कई साल तक ऐसा ही किया तो मैं ने अपने अन्दर इस का बे इन्तिहा मज़ा पाया। मैं तन्हाई में येह ज़िक्र करता रहा। फिर एक दिन मेरे मामूंजान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने फ़रमाया : ऐ सह्ल ! **अल्लाह** तआ़ला जिस शख़्स के साथ हो, उसे देखता हो और उस का गवाह हो, क्या वोह उस की ना फ़रमानी करता है ? हरगिज़ नहीं लिहाज़ा तुम अपने आप को गुनाह से बचाओ। फिर मामूंजान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने मुझे मक्तब में भेज दिया। मैं ने सोचा कहीं मेरे ज़िक्र में ख़लल न आ जाए लिहाज़ा उस्ताज़ साहिब से येह शर्त़ मुक़र्रर कर ली कि मैं उन के पास जा कर सिर्फ़ एक घन्टा पढ़ूंगा और वापस आ जाऊंगा। मैं ने मक्तब में छ[6] या सात बरस की उ़म्र में क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ कर लिया। मैं रोज़ाना रोज़ा रखता था। बारह साल की उ़म्र तक मैं जव की रोटी खाता रहा। मैं ने गुज़ारे का इन्तिज़ाम यूं किया कि मैं ने एक दिरहम के जव शरीफ़ ख़रीद लिये और उन्हें पीस कर

www.dawateislami.net

रोटी पका ली । हर रात स-ह़री के वक़्त एक ऊक़िया (या'नी तक़रीबन 70 ग्राम) जव की रोटी खाता, जिस में न नमक होता और न ही सालन । येह एक दिरहम मुझे साल भर के लिये काफ़ी होता । फिर मैं ने इरादा किया कि तीन दिन मुसल्सल फ़ाक़ा करूंगा और इस के बा'द खाऊंगा । फिर पांच दिन, फिर सात दिन और फिर पच्चीस दिनों का मुसल्सल फ़ाक़ा रखा । (या'नी 25 दिन के बा'द एक बार खाना खाता ।) बीस साल तक येही त़रीक़ा रहा फिर मैं ने कई साल तक सैरो सियाह़त की, वापस तुस्तर आया तो जब तक **अल्लाह** तआ़ला ने चाहा शब बेदारी इख़्तियार की । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : मैं ने मरते दम तक ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन **अ़ब्दुल्लाह** तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى को कभी नमक इस्ति'माल करते हुए नहीं देखा ।(1)

बच्चों को दीनी ता'लीम भी ज़रूर दिलवाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि मामूंजान की शफ़्क़त और तरबियत ने ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन **अ़ब्दुल्लाह** तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى को कहां से कहां पहुंचा दिया लिहाज़ा हमें भी अपने छोटे बच्चों को ''टाटा पापा'' सिखाने के बजाए इब्तिदा ही से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेना सिखाना

مدینہ

(1) احیاء العلوم، کتاب ریاضۃ النفس و تھذیب الأخلاق، بیان الطریق فی ریاضۃ الصبیان فی أول نشوھم...الخ، ۹۱/۳

www.dawateislami.net

चाहिये। अपने म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नी से खेलते हुए सिखाने की निय्यत से उन के सामने बार बार "**अल्लाह अल्लाह**" करते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह भी ज़बान खोलते ही सब से पहला लफ़्ज़ "**अल्लाह**" कहेंगे इस त़रह़ सीखने और सिखाने वाले दोनों को इस की ब-र-कतें नसीब होंगी। मगर अफ़्सोस ! आज कल बच्चा जब कुछ संभलता है तो घर वालों की त़रफ़ से बच्चे को A,B,C और One, Two, Three बोलना तो सिखाया जाता है मगर क़ुरआने पाक पढ़ना नहीं सिखाया जाता, अगर सिखाया भी जाता है तो किसी दुरुस्त पढ़ाने वाले क़ारी का इन्तिख़ाब नहीं किया जाता। ज़िम्नन अगर कोई क़ाइदा पढ़ा लिया फ़बिहा वरना सिर्फ़ दुन्यवी ता'लीम पर ही तवज्जोह दी जाती है। येही वज्ह है कि हमारे मुआ़-शरे में बहुत से पढ़े लिखे लोग ऐसे भी हैं जो क़ुरआने पाक पढ़ लेने का दा'वा तो करते हैं मगर उन्हें सह़ीह़ त़रीक़े से क़ुरआने पाक पढ़ना नहीं आता क्यूं कि न उन्हें हुरूफ़ की पहचान होती है और न ही मख़ारिज का ठिकाना ! अल्फ़ाज़ का तलफ़्फ़ुज़ ही दुरुस्त नहीं होता। अगर बचपन में उन की इस्लामी ता'लीमात के मुत़ाबिक़ ता'लीमो तरबियत की जाती, उन्हें दुन्यवी ता'लीम के साथ साथ दीनी ता'लीम से भी आरास्ता किया जाता तो वोह आज अच्छे त़रीक़े से क़ुरआने पाक पढ़ते और अपने वालिदैन के लिये स-द-क़ए जारिया का सबब बनते।

www.dawateislami.net

याद रखिये ! अगर कोई बचपन में किसी भी वज्ह से दुरुस्त कुरआने पाक पढ़ना न सीख सका तो बालिग़ होने के बा'द उस के लिये इतनी तज्वीद के साथ कुरआने पाक पढ़ना जिस से हुरूफ़ एक दूसरे से मुमताज़ हो जाएं और ग़लत़ पढ़ने से बचा जाए येह ज़रूरी है। **फ़तावा र-ज़विय्या** में है : अइम्मए दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن वाज़ेह़ तौ़र पर फ़रमाते हैं कि आदमी से कोई कुरआनी ह़र्फ़ ग़लत़ अदा होता हो तो उस पर उसे सीखने और दुरुस्त त़रीक़े से अदा करने की कोशिश करना वाजिब है, अगर कोशिश नहीं करेगा तो उसे मजबूर न समझा जाएगा और उस की नमाज़ न होगी। बहुत से उ-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने ग़लत़ कुरआन पढ़ने वाले के लिये सह़ीह़ कुरआने पाक पढ़ने की कोशिश करने के ज़माने की कोई मुद्दत मुक़र्रर नहीं की बल्कि हुक्म दिया कि उ़म्र भर दिन रात हमेशा इस के लिये कोशिश करता रहे।[1]

औलाद को फ़रमां बरदार बनाने का रूह़ानी इ़लाज

सुवाल : ना फ़रमान औलाद को फ़रमां बरदार बनाने का रूह़ानी इ़लाज इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : औलाद को फ़रमां बरदार बनाने के तीन रूह़ानी इ़लाज पेशे ख़िदमत हैं :

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, 6/319 मुलख़्ख़सन, रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

(1) हर नमाज़ के बा'द ज़ैल में दी हुई दुआ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में म-दनी माहौल क़ाइम होगा।

(اَللّٰهُمَّ) رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿۷۴﴾ (پ۱۹، الفرقان: ۷۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेश्वा बना।[1]

(2) ना फ़रमान बच्चा जब सोया हो तो सिरहाने खड़े हो कर ज़ैल में दी हुई आयात सिर्फ़ एक बार इतनी आवाज़ से पढ़ें कि उस की आंख न खुले। अव्वल व आख़िर एक मर्तबा दुरूद शरीफ़ के साथ 11 ता 41 दिन तक पढ़ें। بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿۲۱﴾ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿۲۲﴾ (پ۳۰، البروج: ۲۱-۲۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि वोह कमाल शरफ़ वाला क़ुरआन है लौहे महफ़ूज़ में।

(3) ना फ़रमान औलाद को फ़रमां बरदार बनाने के लिये ता हुसूले मुराद नमाज़े फ़ज्र के बा'द आस्मान की त़रफ़ रुख़ कर के يَاشَهِيْدُ 21 बार पढ़ें। (अव्वल व आख़िर एक मर्तबा दुरूदे पाक भी पढ़ें।)

मेरे घर वाले सब पाबन्दे सुन्नत
बनें ऐसा करम हो जाने रह़मत

(वसाइले बख़्शिश)

---

1 ..... मसाइलुल क़ुरआन, स. 290 मुलख़्ख़सन, रूमी पब्लीकेशन्ज़, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

औलाद को फ़रमां बरदार बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपनी औलाद को फ़रमां बरदार बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना भी है । आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक म-दनी बहार आप के पेशे ख़िदमत है चुनान्चे शाहदरा (मर्कज़ुल औलिया लाहोर) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं अपने वालिदैन का इक्लौता बेटा था, ज़ियादा लाड प्यार ने मुझे ह़द द-रजा ढीट और मां बाप का सख़्त ना फ़रमान बना दिया था, रात गए तक आवारा गर्दी करता और सुब्ह़ देर तक सोया रहता । मां बाप समझाते तो उन को झाड़ देता । वोह बेचारे बा'ज़ अवक़ात रो पड़ते । दुआ़एं मांगते मांगते मां की पलकें भीग जातीं । उस अ़ज़ीम लम्ह़े पर लाखों सलाम जिस "लम्ह़े" में मुझे दा'वते इस्लामी वाले एक आ़शिक़े रसूल से मुलाक़ात की सआ़दत मिली और उस ने मह़ब्बत और प्यार से इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझ पापी व बदकार को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार किया चुनान्चे मैं आ़शिक़ाने रसूल के हमराह तीन दिन के म-दनी

www.dawateislami.net

क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। न जाने उन आ़शिक़ाने रसूल ने तीन दिन के अन्दर क्या घोल कर पिला दिया कि मुझ जैसे ढीट इन्सान का पथ्थर नुमा दिल जो मां बाप के आंसूओं से भी न पिघलता था मोम बन गया, मेरे दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं म-दनी क़ाफ़िले से नमाज़ी बन कर लौटा। घर आ कर मैं ने सलाम किया, वालिद साहिब की दस्त बोसी की और अम्मीजान के क़दम चूमे। घर वाले हैरान थे ! इस को क्या हो गया है कि कल तक जो किसी की बात सुनने के लिये तय्यार नहीं था वोह आज इतना बा अदब बन गया है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत ने मुझे यक्सर बदल कर रख दिया और येह बयान देते वक़्त मुझ साबिक़ा बे नमाज़ी को "सदाए मदीना"[1] लगाने की ज़िम्मादारी मिली हुई है।

गर्चे आ'माले बद, और अफ़्आ़ले बद
ने है रुस्वा किया, क़ाफ़िले में चलो
कर सफ़र आओगे, तुम सुधर जाओगे
मांगो चल कर दुआ, क़ाफ़िले में चलो

वालिदैन पर औलाद के हुक़ूक़

सुवाल : वालिदैन पर औलाद के क्या क्या हुक़ूक़ हैं ?

1..... दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने को "सदाए मदीना" लगाना कहते हैं। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

जवाब : जिस त़रह़ औलाद पर वालिदैन के हुक़ूक़ होते हैं इसी त़रह़ औलाद के भी वालिदैन पर हुक़ूक़ होते हैं । वालिदैन पर औलाद के जो हुक़ूक़ आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने बयान फ़रमाए हैं उन में से चन्द हुक़ूक़ पेशे ख़िदमत हैं : ❁ ज़बान खुलते ही **अल्लाह अल्लाह** फिर पूरा कलिमा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه भरपूर कलिमए त़य्यिबा सिखाए। ❁ जब तमीज़ आए अदब सिखाए, खाने, पीने, हंसने, बोलने, उठने, बैठने, चलने, फिरने, ह़या, लिह़ाज़, बुज़ुर्गों की ता'ज़ीम, मां बाप, उस्ताज़ और दुख़्तर (या'नी बेटी) को शोहर के भी इत़ाअ़त के तुरुक़ (या'नी त़रीक़े) व आदाब बताए। ❁ क़ुरआने मजीद पढ़ाए। ❁ उस्ताज़ नेक, सालेह़, मुत्तक़ी, सह़ीहुल अ़क़ीदा, सिन रसीदा के सिपुर्द कर दे और दुख़्तर को नेक पारसा औ़रत से पढ़वाए। ❁ बा'दे ख़त्मे क़ुरआन हमेशा तिलावत की ताकीद रखे। ❁ अ़क़ाइदे इस्लाम व सुन्नत सिखाए कि लौहे सादा फ़ित्रते इस्लामी व क़बूले ह़क़ पर मख़्लूक़ है (या'नी छोटे बच्चे दीने फ़ित़रत पर पैदा किये गए हैं येह ह़क़ को क़बूल करने की सलाह़िय्यत रखते हैं लिहाज़ा) इस वक़्त का बताया पथ्थर की लकीर होगा। ❁ हुज़ूरे अक़्दस, रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत व ता'ज़ीम इन के दिल में डाले कि अस्ले ईमान व ऐने ईमान है। ❁ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आल व

www.dawateislami.net

अस्हाब व औलिया व उ-लमा की महब्बत व अ़ज़मत ता'लीम करे कि अस्ले सुन्नत व ज़ेवरे ईमान बल्कि बाइ़से बक़ाए ईमान है। ❁ सात बरस की उ़म्र से नमाज़ की ज़बानी ताकीद शुरूअ़ कर दे। ❁ इ़ल्मे दीन ख़ुसूसन वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ व रोज़ा के मसाइल, तवक्कुल, क़नाअ़त, ज़ोहद, इख़्लास, तवाज़ोअ़, अमानत, सिद्क़, अ़द्ल, ह़या, सलामते सुदूर व लिसान वग़ैरहा ख़ूबियों के फ़ज़ाइल, ह़िर्सो त़मअ़, हुब्बे दुन्या, हुब्बे जाह, रिया, उ़ज्ब, तकब्बुर, ख़ियानत, किज़्ब, ज़ुल्म, फ़ोहूश, ग़ीबत, ह़सद, कीना वग़ैरहा बुराइयों के रज़ाइल पढ़ाए। ❁ ख़ास पिसर (या'नी बेटे) के हुक़ूक़ से येह है कि इसे लिखना, पैरना (या'नी किसी फ़न में माहिर होना), सिपह-गरी सिखाए। **सूरए माइदह** की ता'लीम दे। ए'लान के साथ इस का ख़तना करे। ❁ ख़ास दुख़्तर (या'नी बेटी) के हुक़ूक़ से येह है कि इस के पैदा होने पर नाख़ुशी न करे बल्कि ने'मते इलाहिय्या जाने, इसे सीना, पिरोना, कातना, खाना पकाना सिखाए और **सूरए नूर** की ता'लीम दे[1]।[2]

---

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, 24/454, 455 मुल-त-क़त़न

2 ..... वालिदैन पर औलाद के हुक़ूक़ के बारे में मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का रिसाला "مَشْعَلَةُ الْاِرْشَادِ فِيْ حُقُوْقِ الْاَوْلَادِ" बनाम "औलाद के हुक़ूक़" हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर इस का मुत़ा-लआ़ कीजिये। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

गिरते बालों का इलाज

सुवाल : दाढ़ी और सर के बाल बहुत गिरते हैं, बराए करम इस के लिये कोई इलाज इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

जवाब : दाढ़ी या सर के बाल झड़ते हों या गन्ज हो तो आठ चम्मच ज़ैतून के गर्म किये हुए तेल में एक चम्मच अस्ली शहद और एक चम्मच बारीक पिसी हुई दारचीनी मिला लें फिर जहां के बाल झड़ते हों वहां ख़ूब मसलें फिर अन्दाज़न पांच मिनट के बा'द धो लें या नहा लें । बचा हुवा तेल दोबारा भी इस्ति'माल कर सकते हैं اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ 12 दिन में फ़ाएदा नज़र आ जाएगा, मगर ता हुसूले शिफ़ा येह अमल जारी रखिये ।[1] येह तो बाल गिरने का तिब्बी इलाज था जब कि म-दनी इलाज येह है कि बाल झड़ रहे हों या दांत, कोई बीमारी हो या परेशानी इन्सान को हर हाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करना चाहिये क्यूं कि शिक्वा व शिकायत करने से बीमारियां और परेशानियां दूर नहीं हो जातीं अलबत्ता उन पर मिलने वाले अज्रो सवाब से इन्सान महरूम हो जाता है लिहाज़ा बिला ज़रूरत लोगों को अपने दुख दर्द की कहानियां सुनाने और उन

---

1 ..... मज़ीद मा'लूमात हासिल करने के लिये शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तस्नीफ़ "घरेलू इलाज" का मुता-लआ कीजिये । (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

की हमदर्दियां पाने के बजाए उन्हें पोशीदा रख कर सब्र के ज़रीए अज्र कमाना चाहिये ।

मुसीबत पर सब्र करने और इसे पोशीदा रखने के फ़ज़ाइल के भी क्या कहने ! चुनान्चे बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने चैन है : जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे पोशीदा रखा और लोगों पर ज़ाहिर न किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे ।[1] एक और ह़दीसे पाक में इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान को मरज़, परेशानी, रन्ज, अज़िय्यत और ग़म में से जो मुसीबत पहुंचती है यहां तक कि कांटा भी चुभता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देता है ।[2] येह हर रन्जो ग़म और मुसीबत का म-दनी इलाज है ।

हर ह़ाल में शुक्र अदा करना चाहिये

सुवाल : क्या हर बीमारी और परेशानी पर शुक्र बजा लाना चाहिये ?

जवाब : जी हां कोई भी बीमारी हो या परेशानी इन्सान को हर ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करना चाहिये क्यूं कि कुफ़्र और गुनाहों की बीमारियों के सिवा कोई भी बीमारी व परेशानी ऐसी नहीं जिस में कोई भलाई मौजूद न हो जैसा कि ह़ुज्जतुल

---

1 ..... مجمع الزوائد، كتاب الزهد، بَابٌ فِيمَنْ صَبَرَ عَلَى الْعَيْشِ الشَّدِيدِ وَلَمْ يَشْكُ إِلَى النَّاسِ، ۱۰/۴۵۰، حدیث: ۱۷۸۷۲ دار الفکر بیروت

2 ..... بخاری، کتاب المرضی، باب ما جاء فی کفارۃ المرض، ۴/۳، حدیث: ۵۶۴۱ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : सख़्ती और मुसीबत में शुक्र अदा करना लाज़िम है क्यूं कि कुफ़्र व गुनाह के सिवा कोई भी ऐसी मुसीबत व बला नहीं जिस में कोई न कोई भलाई मौजूद न हो, तुम इस से वाक़िफ़ नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी भलाई को ख़ूब जानता है। अगर दुन्या के किसी काम में मुसीबत वाक़ेअ़ हो तो शुक्र अदा करना चाहिये कि दीन के काम में कोई मुसीबत वाक़ेअ़ नहीं हुई जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन **अ़ब्दुल्लाह** तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي की बारगाह में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की, कि चोर मेरे घर में दाख़िल हो कर तमाम माल चुरा कर ले गया है। उन्हों ने फ़रमाया : येह मक़ामे शुक्र है कि चोर आया और माल चुरा कर ले गया, अगर शैत़ान चोर बन कर आता और مَعَاذَاللّٰه तुम्हारा ईमान चुरा कर ले जाता तो फिर क्या करते ?

इसी त़रह़ अगर कोई शख़्स बीमारी या किसी मुसीबत में मुब्तला है तो उसे भी शुक्र अदा करना चाहिये कि इस से बड़ी बीमारी और मुसीबत में मुब्तला नहीं क्यूं कि कोई भी बीमारी और मुसीबत ऐसी नहीं जिस से बदतर कोई बीमारी और मुसीबत न हो। जो शख़्स हज़ार लाठियां खाने के लाइक़ हो तो अगर उसे सो लाठियां मारी जाएं तो येह उस के लिये शुक्र का मक़ाम है। मन्क़ूल है कि मशाइख़ में से एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सर पर किसी ने त़श्त भर कर ख़ाक डाल दी। उन्हों ने शुक्र

www.dawateislami.net

अदा किया और फ़रमाया : मैं आग डाले जाने का मुस्तहिक़ था लेकिन मेरे सर पर फ़क़त ख़ाक डाली गई तो येह कमाले ने'मत है ।(1)

तक्लीफ़ पर रिज़ा की अनोखी ह़िकायत

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का गुज़र एक ऐसे शख़्स के पास से हुवा जो अन्धा, कोढ़ी, अपाहज और मुकम्मल फ़ालिज ज़दा था और जुज़ाम की वज्ह से उस का गोश्त भी बिखरा हुवा था मगर वोह कह रहा था : "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلٰی بِہٖ کَثِیْرًا مِّنْ خَلْقِہٖ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे उस बीमारी से मह़फ़ूज़ रखा जिस में उस ने अपनी बहुत सारी मख़्लूक़ को मुब्तला किया है ।" येह कलिमात सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उस से फ़रमाया : ऐ बन्दए ख़ुदा ! कौन सी मुसीबत है जिस से तू मह़फ़ूज़ है ? अ़र्ज़ की : "ऐ **रूहुल्लाह** عَلَیْہِ السَّلَام ! मैं उस शख़्स से बेहतर हूं जिस के दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी वोह मा'रिफ़त नहीं डाली जो मेरे दिल में डाली है ।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : तुम सच कहते हो, अपना हाथ बढ़ाओ । फिर जैसे ही आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उस का हाथ पकड़ा तो उस का चेहरा इन्तिहाई ख़ूब सूरत और बाक़ी जिस्म दुरुस्त हो गया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की

---

1 ...... کیمیائے سعادت، رکن چہارم، منجیات، ۲/۸۰۵ انتشارات گنجینہ قہران

www.dawateislami.net

तमाम बीमारियां दूर फ़रमा दीं। फिर उस ने आप عَلَيْهِ السَّلَام की सोह्बत इख़्तियार की और आप के साथ ही इबादत में मसरूफ़ हो गया।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن हर हाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहते और उस का शुक्र बजा लाते लिहाज़ा हमें भी हर हाल में सब्रो शुक्र का मुज़ा-हरा करना चाहिये। याद रखिये ! दुन्यवी अमराज़ और तकालीफ़ अगर्चे वक़्ती तौर पर परेशानी का सबब बनती हैं मगर बसा अवक़ात येह मोमिन के हक़ में रहमत भी हुवा करती हैं कि इन पर सब्र कर के अज्र कमाने और बे हिसाब जन्नत में जाने का मौक़अ़ मिलता है जब कि गुनाहों की बीमारियां इन्तिहाई तबाह कुन हैं कि येह مَعَاذَاللّٰه ईमान बरबाद होने और जहन्नम में जाने का सबब बन सकती हैं।

आ़रिज़ी आफ़ते दुन्या से तो डरता है दिल
हाए बे ख़ौफ़ अ़ज़ाबों से हुवा जाता है
येह तेरा जिस्म जो बीमार है तश्वीश न कर
येह मरज़ तेरे गुनाहों को मिटा जाता है
अस्ल बरबाद कुन अमराज़ गुनाहों के हैं
भाई क्यूं इस को फ़रामोश किया जाता है

(वसाइले बख़्शिश)

मदينه

1 ...... احیاء العلوم، کتاب المحبۃ والشوق والانس والرضا، بیان حقیقۃ الرضا...الخ، ۵/۷۰

www.dawateislami.net

सारी उम्मत के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत

सुवाल : सारी उम्मत के लिये "दुआ़ए मग़्फ़िरत" करने की क्या वज्ह है ?

जवाब : हमारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी उम्मत से बड़ा प्यार है, हमेशा इस गुनहगार उम्मत को याद रखा और इस की बख़्शिश व मग़्फ़िरत के लिये रातों को रोते रहे। दुन्याए आबो गिल में जल्वा अफ़रोज़ होते ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सज्दा फ़रमाया और होंटों पर येह दुआ़ जारी थी : "رَبِّ هَبْ لِىْ اُمَّتِىْ या'नी परवर दगार عَزَّوَجَلَّ! मेरी उम्मत मेरे ह़वाले फ़रमा ।"(1) सफ़रे मे'राज पर रवानगी के वक़्त भी उम्मत के आ़सियों को याद फ़रमा कर आबदीदा हो गए । दीदारे जमाले ख़ुदा वन्दी और ख़ुसूसी नवाज़िशात के वक़्त भी गुनहगाराने उम्मत को याद फ़रमाया । "क़ब्रे अन्वर में भी "رَبِّ اُمَّتِىْ اُمَّتِىْ या'नी ऐ मेरे परवर दगार ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत।" फ़रमा रहे थे ।"(2) क़ब्र में ता ह़श्र "يَارَبِّ اُمَّتِىْ اُمَّتِىْ या'नी ऐ परवर दगार ऐ मेरे रब ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत ।" पुकारते रहेंगे ।(3) क़ियामत के दिन भी लबहाए मुबा-रका पर "يَارَبِّ اُمَّتِىْ اُمَّتِىْ ऐ रब ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत" होगा ।(4) और

---

(1)...... फ़तावा र-ज़विय्या, 30/712

(2)...... مدارج النبوۃ، ۲/۳۴۲ ملخصا مرکزِ اہلسنت برکاتِ رضا ہند

(3)...... کنز العمّال، کتاب القیامۃ، الجزء: ۱۴، ۷/۱۷۸، حدیث: ۳۹۱۰۸ ملخصاً دار الکتب العلمیۃ بیروت

(4)...... مسلم، کتاب الایمان، باب أدنٰی أھل الجنّۃ منزلۃ فیھا، ص۱۰۴، حدیث: ۴۷۹ ماخوذاً دار الکتاب العربی بیروت

www.dawateislami.net

अब भी अपनी उम्मत के आ'माल मुला-हज़ा फ़रमा कर नेकियों पर हम्दे इलाही बजा लाते और बदियों पर इस्तिग़फ़ार फ़रमाते हैं ।[1]

(**शैख़े त़रीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :) सरकारे अबद क़रार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कहीं भी अपनी उम्मत को फ़रामोश न फ़रमाया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह आरज़ू है कि मेरी उम्मत की बख़्शिश व मग़्फ़िरत हो जाए, इस लिये मैं भी येह दुआ करता हूं कि "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी, हमारे मां बाप की और सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा ।" यहां येह मस्अला भी ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि सारी उम्मत की मग़्फ़िरत की दुआ तो कर सकते हैं अलबत्ता सारी उम्मत की बे हिसाब मग़्फ़िरत की दुआ नहीं मांग सकते ।

लाइक़े नार हैं मेरे आ'माल
इल्तिजा या ख़ुदा करम की है
अपनी उम्मत की मग़्फ़िरत हो जाए
आरज़ू शाफ़ेए उमम की है

(वसाइले बख़्शिश)

---

1 ..... جامع صغیر، حرف الحاء، ص۲۲۹، حدیث: ۳۷۷۱ ماخوذاً دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

फ़ौत शुदा को मुरीद करवाना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़ौत शुदा को मुरीद करवाया जा सकता है ?

जवाब : जो फ़ौत हो जाए उसे मुरीद नहीं करवा सकते क्यूं कि मुरीद होने का मक़्सद येह होता है कि पीरे कामिल की रहनुमाई और बातिनी तवज्जोह की ब-र-कत से मुरीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी वाले कामों से बचते हुए इन की फ़रमां बरदारी वाले कामों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार कर अपनी क़ब्रो आख़िरत को बेहतर बना सके जब कि मरने वाला अपनी ज़िन्दगी गुज़ार चुका है।

वालिदैन की इजाज़त के बिग़ैर म-दनी क़ाफ़िलों में जाना कैसा ?

सुवाल : अगर वालिदैन सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने से रोकते हों तो क्या उन की इजाज़त के बिग़ैर म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर सकते हैं ? नीज़ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने के लिये वालिदैन को कैसे राज़ी किया जाए ?

जवाब : म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना इल्मे दीन सीखने सिखाने और अपनी क़ब्रो आख़िरत को बेहतर बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है मगर इस के लिये वालिदैन को नाराज़ करने और इन की ना फ़रमानी करने की इजाज़त नहीं। अगर वालिदैन को आप की ख़िदमत की ह़ाजत है इस लिये वोह म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र नहीं करने देते तो आप हरगिज़ म-दनी क़ाफ़िले में

www.dawateislami.net

सफ़र न करें और न ही उन से इजाज़त त़लब करें बल्कि अपने वालिदैन की ख़िदमत बजा लाएं । अगर वालिदैन को आप की ख़िदमत की ह़ाजत नहीं है वैसे ही शफ़्क़त की बिना पर म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने से रोकते हैं तो ऐसी सूरत में ह़िक्मते अ़-मली और नरमी से उन पर इन्फ़िरादी कोशिश कीजिये और उन्हें म-दनी क़ाफ़िलों की ब-र-कतें बताइये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह मान जाएंगे । जब उन की त़रफ़ से बख़ुशी इजाज़त मिल जाए तो बिग़ैर ह़ियलो ह़ुज्जत करने म-सलन इजाज़त मिल जाने के बा'द बार बार "इजाज़त है, इजाज़त है" की रट लगाने से हो सकता है कि उन का दिल फिर शफ़्क़त से भर आए और वोह आप को मन्अ़ कर दें । नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िक्मत निशान है : اَلْحِکْمَۃُ ضَالَّۃُ الْمُؤْمِنِ या'नी ह़िक्मत मोमिन का गुमशुदा ख़ज़ाना है ।[1]

वालिदैन की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ली ह़ज के लिये नहीं जा सकते

याद रखिये ! जिस त़रह़ वालिदैन की इजाज़त के बिग़ैर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र नहीं कर सकते यूं ही नफ़्ली ह़ज के लिये भी नहीं जा सकते । इस ज़िम्न में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना

1 ..... جامع صغیر، حرف الکاف، فصل فی المحلی بأل من ھذا الحرف، ص ۴۰۲، حدیث: ۶۴۶۲

www.dawateislami.net

शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के नफ़्ली ह़ज पर जाने और अपनी वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا से ह़िक्मते अ़-मली से इजाज़त पाने का वाक़िआ़ मुला-ह़ज़ा कीजिये चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : पहली बार (ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا) की ह़ाज़िरी वालिदैने माजिदैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا के साथ थी। उस वक़्त मेरी उ़म्र का तेईसवां साल था। वापसी में तीन दिन तूफ़ान शदीद रहा था। लोगों ने कफ़न पहन लिये थे। **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ किया और सरकारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मदद मांगी اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह मुख़ालिफ़ हवा जो तीन दिन से ब शिद्दत चल रही थी दो घड़ी में बिल्कुल मौक़ूफ़ हो गई और जहाज़ ने नजात पाई। मां की मह़ब्बत ! वोह तीन दिन की सख़्त तक्लीफ़ याद थी, मकान में क़दम रखते ही पहला लफ़्ज़ (वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने) जो मुझ से फ़रमाया वोह येह था "ह़ज्जे फ़र्ज़ **अल्लाह** तआ़ला ने अदा फ़रमा दिया, अब मेरी ज़िन्दगी भर दोबारा इरादा न करना।" उन का येह फ़रमाना मुझे याद था और मां बाप की मुमा-न-अ़त के साथ ह़ज्जे नफ़्ल जाइज़ नहीं, यूं ख़ुद अदा करने से मजबूर था। यहां से नन्हे मियां (छोटे भाई ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان) और ह़ामिद रज़ा ख़ान (या'नी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के बड़े शहज़ादे) मअ़ मु-तअ़ल्लिक़ीन ब इरादए ह़ज रवाना हुए। लखनउ तक उन लोगों को मैं पहुंचा कर वापस आ गया लेकिन त़बीअ़त में एक क़िस्म का इन्तिशार रहा। एक

www.dawateislami.net

हफ़्ता त़बीअ़त सख़्त परेशान रही, एक रोज़ अ़स्र के वक़्त ज़ियादा इज़्त़िराब हुवा और दिल वहां की ह़ाज़िरी के लिये बेचैन हुवा। बा'दे मग़रिब मौलवी नज़ीर अह़मद साह़िब को स्टेशन भेज कर बम्बई तक सेकन्ड क्लास का कमरा मख़्सूस (Reserve) करवा लिया ताकि उस में नमाज़ों का आराम रहे, इ़शा की नमाज़ से अव्वल वक़्त में फ़ारिग़ हो लिया। चार पहियों वाली मख़्सूस गाड़ी भी आ गई। अब सिर्फ़ वालिदए माजिदा से इजाज़त लेना बाक़ी है जो निहायत अहम मस्अला था और गोया इस का यक़ीन था कि वोह इजाज़त न देंगी, किस त़रह़ अ़र्ज़ करूं और बिग़ैर इजाज़ते वालिदा ह़ज्जे नफ़्ल को जाना ह़राम है। आख़िर कार अन्दर मकान में गया। देखा तो वालिदए माजिदा चादर ओढ़े आराम फ़रमा रही हैं, मैं ने आंखें बन्द कर के क़दमों पर सर रख दिया वोह घबरा कर उठ बैठीं और फ़रमाया : क्या बात है ? मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मुझे ह़ज की इजाज़त दे दीजिये। पहला लफ़्ज़ जो फ़रमाया वोह येह था : "ख़ुदा ह़ाफ़िज़" मैं उलटे पाउं बाहर आया और फ़ौरन सुवार हो कर स्टेशन पहुंचा।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने कैसे ह़िक्मते अ़-मली से अपनी वालिदए माजिदा से इजाज़त ली और जैसे ही इजाज़त मिली फ़ौरन उलटे पाउं पलटे और सफ़रे ह़ज पर रवाना हो गए

1 ..... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 181, 183 मुलख़्ख़सन, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

यूं ही अगर आप भी हिक्मते अ-मली और नरमी से अपने वालिदैन पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन से म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की इजाज़त लेंगे तो वोह आप को मन्अ नहीं करेंगे ।

दा'वते इस्लामी के मा'रिज़े वुजूद में आने का मक़्सद

सुवाल : दा'वते इस्लामी क्यूं मा'रिज़े वुजूद में आई ? नीज़ इस का मक़्सद क्या है ?

जवाब : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी मुसल्मानों की गिरती हुई ह़ालत को संभालने और **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उम्मते मह़बूब का रिश्ता मज़बूत़ करने के लिये मा'रिज़े वुजूद में आई है । दा'वते इस्लामी येही चाहती है कि मसाजिद आबाद हों, मुसल्मानों की ज़ाहिरी और बात़िनी इस्लाह़ हो और मुसल्मान फ़राइज़ व वाजिबात के साथ साथ हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक अदाओं को अपनाने वाले बन जाएं, अल ग़रज़ दा'वते इस्लामी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी का जज़्बा मुसल्मानों में उजागर करने के लिये मा'रिज़े वुजूद में आई है ।

दा'वते इस्लामी का म-दनी मक़्सद "अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करना है ।" अपनी इस्लाह़

www.dawateislami.net

की कोशिश के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। काश ! तमाम आ़शिक़ाने रसूल बेकार कामों में अपना वक़्त गंवाने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाबे आख़िरत कमाने की निय्यत से दा'वते इस्लामी के इस म-दनी मक़्सद में शामिल हो कर म-दनी कामों की धूम मचाने वाले बन जाएं।

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम
सारे जहां में मच जाए धूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा
या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश)

ग़मगीन की मदद पर 73 नेकियां :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो किसी ग़मगीन की मदद करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये 73 नेकियां लिखता है, उन में से एक नेकी से उस की दुन्या व आख़िरत की इस्लाह़ होती है और बाक़ी से उस के द-रजात बुलन्द होते हैं।

(شعب الایمان، کتاب الادب، باب فی التعاون علی البر والتقوی، ۶/۱۲۰، حدیث: ۷۶۷۰ دار الکتب العلمیۃ بیروت)

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह	उ़न्वान	सफ़ह
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	औलाद को फ़रमां बरदार बनाने का रूहानी इ़लाज	15
बच्चों की तरबियत कब और कैसे की जाए ?	2	औलाद को फ़रमां बरदार बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़	17
औलाद की सहीह़ तरबियत न करने की इ़ब्रत नाक दास्तान	4	वालिदैन पर औलाद के हुक़ूक़	18
बच्चों की तरबियत की अहम्मिय्यत	5	गिरते बालों का इ़लाज	21
तरबियत करने वाले को कैसा होना चाहिये ?	8	हर ह़ाल में शुक्र अदा करना चाहिये	22
		तक्लीफ़ पर रिज़ा की अनोखी ह़िकायत	24
बार बार टोकते रहने से इज्तिनाब कीजिये	9	सारी उम्मत के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत	26
		फ़ौत शुदा को मुरीद करवाना कैसा ?	28
छोटे म-दनी मुन्नों की तरबियत का त़रीक़ा	11	वालिदैन की इजाज़त के बिग़ैर म-दनी क़ाफ़िलों में जाना कैसा ?	28
बच्चों की तरबियत से मालामाल एक ज़बर दस्त ह़िकायत	11	वालिदैन की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ली ह़ज के लिये नहीं जा सकते	29
बच्चों को दीनी ता'लीम भी ज़रूर दिलवाइये	13	दा'वते इस्लामी के मा'रिज़े वुजूद में आने का मक़्सद	32

www.dawateislami.net

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुम्अ़रात बा'द नमाज़े इ़शा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ**" अपनी इस्लाह़ के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133109

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ अह़मदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ देहली :- मक-त-बतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदरआबाद :- मक-त-बतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net